13

सुखी राजकुमार

(कहानी)

बोलना/सुनना	पढ़ना	लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• शिष्टाचार की भाषा • आत्मीयतापूर्ण संबोधन • आग्रहपूर्ण वाक्य	• गद्य • संवादात्मक और किस्सा गोई शैली की कहानी	• दूसरों को समझाने और उन्हें क्रियाशील करने वाला लेखन, कहानी	• अपने पक्ष में निर्णय लेने के लिए बाध्य करने वाली वाक्य-संरचना • चित्रात्मक भाषा • कम शब्दों में कहने की कला • सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्य	• सीमित और व्यापक अनुभव के आधार पर व्यवहार में अंतर का स्पष्टीकरण • अपरिचय और परिचय की स्थितियों में व्यवहार का अंतर बताना • रूप और कर्म के सौंदर्य पर सोचना और लिखना

सारांश

'सुखी राजकुमार' दरअसल एक प्रतिमा है, जो शहर के बीचों-बीच स्थापित है। सोने से मढ़ी और नीलम तथा लाल जड़ी प्रतिमा के सौंदर्य से लोग अभिभूत हैं। एक दिन एक गौरैया शहर में आती है और उस प्रतिमा के नीचे ठहरने का निश्चय करती है। उसके ऊपर एक बूँद गिरती है, तो उसे पता चलता है कि सुखी राजकुमार रो रहा है। राजकुमार उसे बताता है कि जब वह जीवित था, तो उसका जीवन विलासपूर्ण था और वह दुख जैसी चीज़ से परिचित नहीं था, किंतु अब वह शहर के बीच ऊँचाई पर स्थापित होने के कारण अपने शहर में बसे लोगों के दुखों को देख सकता था और उनके दुख से दुखी था। इस क्रम में वह पहले एक मेहनती स्त्री और उसके बीमार बच्चे का ज़िक्र करता है तथा गौरैया से अपनी तलवार की मूठ में जड़ा लाल निकालकर उसे दे आने के लिए कहता है। गौरैया अपने नील देश जाने के कार्यक्रम में मस्त है और उसे बच्चों से स्नेह नहीं है, क्योंकि पिछले वसंत में दो बच्चों ने उसे ढेले मारे थे। मगर, राजकुमार को उदास देखकर वह उसकी बात मान लेती है। बच्चे के प्रति उत्पन्न सहानुभूति के वश वह उस पर अपने पंखों से हवा झलती है। रात को जब वह पुनः सपनों के देश जाने को प्रस्तुत होती है, तो राजकुमार उससे एक गरीब तरुण लेखक की मदद हेतु अपनी एक आँख का नीलम दे आने के लिए कहता है। राजकुमार के त्याग से गौरैया करुण हो उठती है। अगली बार जब वह नील देश की सुंदरता का बयान करते हुए राजकुमार से विदा माँगती है, तो राजकुमार उससे एक गरीब लड़की की मदद के लिए अपनी दूसरी आँख वाला नीलम दे आने का आग्रह करता है। राजकुमार के इस उत्सर्ग से प्रभावित गौरैया अपना कार्यक्रम रद्द कर देती है। राजकुमार अब अंधा है, अतः गौरैया शहर-भर की ख़बरें उसे सुनाती है, विशेषतः गरीब, दुखी और परेशान लोगों की ख़बरें। और, राजकुमार के कहने पर वह प्रतिमा के स्वर्णपत्र निर्धन लोगों में बाँटती रहती है। प्रतिमा अब बिल्कुल मनहूस दिखने लगती है, पर शहर के बच्चों के चेहरों पर गुलाबी आभा आने लगती है। बढ़ती ठंड में गौरैया वहीं– प्रतिमा के पैरों पर– प्राण त्याग देती है। अगले दिन मेयर अपने सभासदों के साथ घूमते हुए उस प्रतिमा को हटाने और अपनी प्रतिमा लगाने का प्रस्ताव करता है। प्रतिमा और गौरैया की लाश को कूड़ेखाने में फेंक दिया जाता है। ईश्वर के आदेश पर देवदूत उन्हें ले जाते हैं और उन्हें स्वर्ग में हमेशा के लिए स्थान दे दिया जाता है।

मुख्य बिंदु

- प्रतिमा के सौंदर्य की चर्चा का आधार सोना, नीलम और लाल होना।
- रूप, सुख, वैभव, ऐश्वर्य में ही सौंदर्य की तलाश।
- महल में अपनी मौजमस्ती में डूबे राजकुमार का दुख के बारे में न सोचना।
- अनुभवों का विस्तार होने पर करुणा की भावना उत्पन्न होना। समानुभूति।
- भावना को क्रियारूप में परिणत करना–दूसरों के हित में त्याग करना। लाल, नीलम और सोने के पत्रों यानी अपने अंगों और प्रशंसनीय चीज़ों का बलिदान।
- गौरैया का अपने सपनों और सुख-सुविधाओं की दुनिया से बाहर आना।
- राजकुमार के गुणों और कर्मों से प्रभावित होकर खुद भी उन कामों में लगना।
- राजकुमार के साथ-साथ गौरैया का भी आत्मोत्सर्ग।
- मेयर तथा सभासदों का शहर की सुंदरता के लिए बाहरी रूप-सौंदर्य को ही देखना।
- राजनीतिज्ञों की चापलूसी और स्वार्थपरता।
- ईश्वर की दृष्टि में राजकुमार और गौरैया के बलिदान का महत्त्व।

आइए समझें

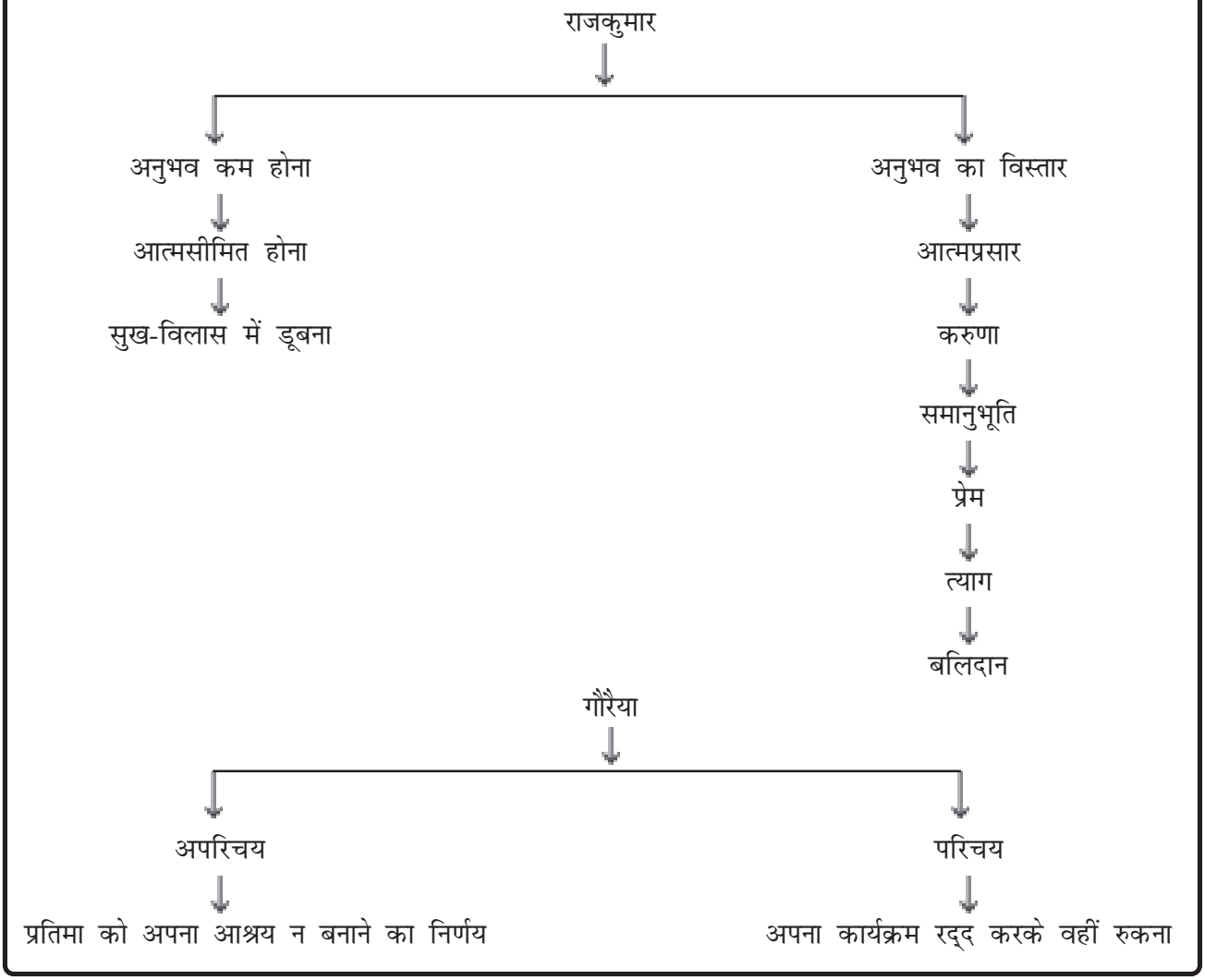

गौरैया–अपरिचय→सद्गुण के कारण लगाव→त्याग से प्रभावित होकर प्रेम→बलिदान से प्रभावित होकर प्रेम का प्रगाढ़ होना→आत्मोत्सर्ग से प्रभावित होकर राजकुमार के कार्यों के प्रति समर्पण→स्वयं समानुभूति का अनुभव→प्राणोत्सर्ग

सौंदर्य कहाँ है?

आम लोगों के लिए : प्रतिमा के रूप और कीमत में

जीवित राजकुमार के लिए : सुख-सुविधाओं एवं ऐश्वर्य-विलास में

प्रतिमा के लिए : मनुष्य-जीवन की विसंगतियों के बीच जीवन की इच्छा में

गौरैया के लिए : पहले रहस्य, रोमांच और अद्भुत होने में, बाद में त्याग और बलिदान में

ईश्वर की दृष्टि में : कर्म में

आपकी दृष्टि में : ? .....

- गौण पात्रों के ज़रिए वातावरण/परिवेश को उभारा गया है।
- धनी-वर्ग द्वारा गढ़ी गई सौंदर्य और सुख की परिभाषा के प्रश्न को कहानी में स्थितियों के वैषम्य (कन्ट्रास्ट) के ज़रिए उभारा गया है।
- कहानी को नेरेशन (वर्णन) की अपेक्षा संवादों के ज़रिए बढ़ाया गया है, जिससे कथानक में चुस्ती आ गई है।
- यह कहानी ऑस्कर वाइल्ड ने अंग्रेज़ी में लिखी थी, जिसका अनुवाद करते हुए धर्मवीर भारती ने अंग्रेज़ी के शब्द-प्रयोग, मुहावरों और विशिष्ट अभिव्यक्तियों को हिंदी भाषा और संस्कृति के अनुकूल ढाल दिया है।

कहानी का संप्रेष्य

- कहानी में समय और स्थान का उल्लेख न करके हर उस जगह की बात की गई है, जहाँ–
  - (क) नगर धनी और निर्धन वर्ग में बँटे हैं;
  - (ख) राजनीतिज्ञ स्वार्थी है;
  - (ग) कलाविज्ञ रूप-सौंदर्य देखते हैं;
  - (घ) आम लोग कीमत से चीज़ों का मूल्यांकन करते हैं;
  - (ङ) अभिजात और धनी लोग आत्मकेंद्रित हैं;
  - (च) कर्मचारी मालिकों के अनुसार व्यवहार करते हैं।
- ऐसी व्यवस्था में सबसे बदतर स्थिति बच्चों की होती है, जो भविष्य हैं।
- भविष्य की भयावहता की ओर ध्यानाकर्षण।
- बाह्य एवं आंतरिक सौंदर्य का प्रश्न–कहानीकार मानवीय गुणों और कर्मों के सौंदर्य की सराहना के लिए प्रेरित करता है :
  - (क) राजकुमार की प्रतिमा जब तक सोने से मढ़ी और रत्नजड़ित है, सभी उसकी प्रशंसा करते हैं;
  - (ख) इनका दान कर देने के बाद मेयर, सभासद और कलाविज्ञ उसे मटमैला और मनहूस बताकर हटाते हैं;
  - (ग) गौरैया राजकुमार के कुरूप होने की प्रक्रिया में उसके कर्म-सौंदर्य को देखते हुए उससे क्रमशः अधिक प्रेम करने लगती है; यहाँ तक कि ठंड में प्राण त्याग देती है।
  - (घ) ईश्वर द्वारा राजकुमार और गौरैया को स्वर्ग में स्थान देना।
- कहानी में एक विडंबना का उद्घाटन–मानव-समाज में मानवीय गुणों की उपेक्षा का भाव।

  स्पष्टीकरण :
  - (क) इसकी पुष्टि इस बात से कि राजकुमार की मानवीय संवेदनाएँ तब नहीं जागती हैं, जब वह जीवित होता है;
  - (ख) मूर्ति रूप में इन संवेदनाओं के प्रकट होने को मानवेतर प्राणी गौरैया ही समझती है;
  - (ग) मेयर आदि द्वारा कूड़े में फेंका जाना और मानवेतर देवदूतों द्वारा सबसे मूल्यवान समझा जाना;
  - (घ) ईश्वर द्वारा स्वर्ग में सदा के लिए स्थान देना।

यह भी जानिए

- 'सुखी राजकुमार' कहानी को पढ़ने में 20-25 मिनट का समय लगता है। यह कहानी के लिए आदर्श समय-सीमा है।
- 'शतरंज के खिलाड़ी' में भूमिका द्वारा बात स्पष्ट की गई है, जबकि इस कहानी में उपसंहार द्वारा।
- गौरैया के चरित्र में निरंतर परिवर्तन आता है। यह परिवर्तन राजकुमार और उसमें निहत संवेदनाओं-मूल्यों के कर्म में परिवर्तित होने के कारण है।
- व्यक्ति से परिचय उसके प्रति लगाव पैदा करता है। उसके गुण उसके प्रति प्रेम, कर्म उसके प्रति निष्ठा और उसका त्याग व बलिदान उन सद्गुणों एवं कर्मों के प्रति समर्पण का भाव उत्पन्न करते हैं। गौरैया का चरित्र इसी तरह विकसित होता है।
- कहानी में दो ही मुख्य पात्र हैं–राजकुमार और गौरैया।
- गौण पात्र हैं–राजकुमारी की अंगरक्षिका, बीमार बच्चा, तरुण कलाकार, रोती हुई लड़की, बच्चे, मेयर और उसके सभासद, कलाविज्ञ, देवदूत और ईश्वर।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- कहानी की भाषा में चित्रात्मकता है। यह दो प्रकार से है–
  - (i) स्थितियों अथवा व्यक्ति-विशेष की दशा बताने के लिए ब्यौरे देकर;
  - (ii) ध्वन्यात्मक-दृश्यात्मक शब्दों के प्रयोग से।
- वाक्य के भेद– सरल वाक्य; जटिल वाक्य–संयुक्त वाक्य और मिश्र वाक्य
- सरल वाक्य–एक उद्देश्य और एक ही विधेय (एक ही समापिका क्रिया)
- संयुक्त वाक्य–दो समानांतर वाक्यों से बना वाक्य, जो समुच्चयबोधक अव्ययों–और, तथा, एवं, किंतु, परंतु आदि– से जुड़ा होता है।
- मिश्र वाक्य–दो या दो से अधिक वाक्यों से बना वाक्य, पर उसमें एक उपवाक्य प्रधान होता है और दूसरा आश्रित।

योग्यता बढ़ाएँ

- अपना काम करवाने के लिए राजकुमार के संवादों में आदेश का स्वर नहीं, बल्कि अनुरोध की विनम्रता और आग्रह की आत्मीयता है– इस पर ध्यान दीजिए।
- अनुनय, याचना, अनुरोध, आग्रह के भावों को व्यक्त करने वाले वाक्यों पर ध्यान दीजिए और ऐसे नए वाक्यों को लिखने का अभ्यास कीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   'सुखी राजकुमार' कहानी में महत्त्व दिया गया है–

   (क) मानवीय गुणों को

   (ख) कलाप्रियता को

   (ग) प्राकृतिक सौंदर्य को

   (घ) धन व वैभव को

2. 'अच्छी संगत से सद्गुणों का विकास होता है'–इस विषय पर 20-25 शब्दों में अपने विचार लिखिए।
3. 'सुखी राजकुमार' कहानी का कौन-सा अंश आपके हृदय को प्रभावित करता है, 25-30 शब्दों में तर्कसहित अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. 'हमारे समाज में ऐसे बहुत से जीवित लोग हैं, जिनका हृदय सचमुच जस्ते का है'– उदाहरण देते हुए 25-30 शब्दों में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।